"भूषण वीर भावना"

भूषण वीर रस के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। उनके सम्पूर्ण काव्य में वीर रस की प्रधानता है। उन्होंने तीन वीर-काव्यों — 'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी' और 'छत्रसाल दशक' की रचना की है। ये तीनों काव्य भूषण की उदात्त वीर-भावना से ओतप्रोत हैं। इन काव्यों में तत्कालीन जननायक महाराज शिवाजी तथा छत्रसाल के शौर्य एवं पराक्रम का अत्यन्त मार्मिक एवं सजीव चित्रण महाकवि भूषण ने किया है। इन दोनों राष्ट्रनायकों के सुयश एवं कीर्ति गौरव के वर्णन में भूषण की उदात्त वीर-भावना व्यक्त हुई है।

भूषण ने अपने समस्त काव्यों में वीर भाव के औदार्य एवं उत्कर्ष का निरूपण किया है। 'शिवराज भूषण' नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना करते समय वे उस आदि शक्ति दुर्गा का प्रार्थना करते हैं, जो काली है, कपर्दिनी है, मधु कैटभ को मारने वाली है। महिषासुर, चंड-मुंड, भंडासुर, रक्त बीज, शुम्भ-निशुम्भ आदि का समूल नाश करने वाली है। उसी काली एवं दुर्गा से शिवाजी ने विजय की कामना की है —

"जै जयंति, जै आदि सकति जै कालि, कपर्दिनि
जै मधुकैटभ-छलनि देवि, जै महिषबिमर्दिनि
जै चमुंडि जै चंड-मुंड-भंडासुर खंडिनि

— — — — — — — —

सरजा समत्थ- सिवराज कहँ देहि बिजै,
जै जगजननि।"

इस प्रार्थना में भी कवि भूषण की वीर भावना हिलोरें ले रही है। इस तरह की भावना को स्तुतिपरक वीर भावना कहते हैं। प्रायः कवियों ने अपने - अपने वीर नायकों के शौर्य एवं पराक्रम का विश्वव्यापी प्रभाव दिखाने के लिए एवं उनके अद्भुत यश एवं कीर्ति का प्रदर्शन करने के लिए उन्हें ब्रह्म या अवतारी पुरुष घोषित किया है। भूषण ने भी अपने राष्ट्रनायक शिवाजी के अद्वितीय शौर्य, अनुपम पराक्रम एवं असाधारण तेज का निरूपण करने के लिए कहीं उन्हें शिव और विष्णु का अवतार बताया है, तो कहीं उन्हें राम और कृष्ण का अवतार घोषित किया है —

"दसरथ जू के राम भे, वसुदेव के गोपाल।
सोई प्रगटे साहि के, श्री सिवराज भुवाल॥"

इस प्रकार से भूषण ने शिवाजी को एक अवतारी पुरुष मानकर अपनी पौराणिक वीर भावना का परिचय दिया है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि औरंगजेब ने अपनी कुटिल एवं दुर्दम राजनीति का प्रयोग करते हुए भारतवर्ष के अधिकांश राजाओं को अपने अधीनस्थ कर लिया था। उसके भय से मारे सभी छोटे-छोटे राजा उसको चौथ एवं कर दिया करते थे और उसकी दासता मानकर उसी की दया के पात्र बन गये थे, किन्तु वीर शिवाजी ने औरंगजेब की दासता एवं अधीनता कभी नहीं मानी। इसलिए भूषण ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह घोषित किया है —

"श्रीनगर नयपाल जुमिला के छितिपाल,
भेजत रिसाल, चौंर, गद, कुही बाज की।
मेवार ढुंडार मारवाड़ और बुंदेलखण्ड,
झारखण्ड बाँधों-चनी चाकरी इलाज की।
भूवन जे पूरब पछाँह नरनाह ते वै,
ताकत पनाह दिलीपति सिरताज की।
जगत को जैतवार जीत्यो अवरंगजेब,
न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की॥"

अर्थात श्रीनगर, नेपाल, मेवाड़, जयपुर, मारवाड़, बुन्देलखण्ड वीवाँ आदि सभी उत्तर, पूर्व एवं पश्चिम के भारतीय राजा दिल्लीपति औरंगजेब की आज्ञा पाते ही तुरन्त अपनी सेनाएँ भेजते थे। चमर, किला, कुही (घोड़ा), बाज आदि को बादशाह की नजर स्वरूप कर में देते थे और दिल्लीपति औरंगजेब की सेवा करने या उसकी अधीनता मान लेने में ही अपनी सुरक्षा समझते थे, जबकि शेर शिवाजी एक ऐसा दक्षिण का राजा था, जिनकी नीति सर्वथा भिन्न थी और वे औरंगजेब की अधीनता मानने के लिए कभी तैयार नहीं थे। इस ऐतिहासिक तथ्य का वर्णन करके भूषण ने अपनी उदात्त वीर भावना का परिचय दिया है।

औरंगजेब अपनी कूटनीति के छल-बल से शिवाजी को परास्त करने एवं मरवा डालने की अनेक योजनाएँ बनाता था, किन्तु शिवाजी उसकी सभी योजनाएँ विफल कर देते थे। ऐसे ही एक बार बीजापुर नरेश ने भी कूटनीति का प्रयोग करके शिवाजी का वध करने के

लिए अफजल खाँ को भेजा था, जो बिना किसी शस्त्र के शिवाजी से मिलने का वायदा करके आया था, परन्तु जैसे ही शिवाजी उससे गले मिलने लगे, वैसे ही अफजल खाँ ने शिवाजी पर आघात करने के लिए अपनी छिपी हुई तलवार खींच ली। यह देखकर शिवाजी ने भी अपना छिपा हुआ बघनखा निकालकर अफजल खाँ के कलेजे में भोंक दिया और उस कूटनीतिज्ञ को सदा के लिए ठंडा कर दिया। इस घटना का वर्णन भूषण ने इस प्रकार किया है—

"दानव आयो दगा करि जावली दीह भयारो महामद भार्यो
भूषन बाहुबली सरजा तेहि भेंटिबे को निस्संक पधार्यो ॥
बीछू के घाय गिरे अफजल्लहि ऊपर ही सिवराज निहार्यो।
दाबि यों बैठो नरिंद अरिंदहिं मानो मयंद गयंद पछार्यो ॥"

भूषण ने यहाँ पर राजनीतिक कौशल से परिपूर्ण विवरण का वर्णन करके अपनी वीर भावना का परिचय दिया है। भूषण की इस वर्णन पद्धति में ओज, तेज एवं वीर भाव भरा हुआ है।

भूषण ने शिवाजी के चर्म पर आरूढ़ रहने वाले उन प्रबल भावों की व्यंजना की है, जिनमें शिवाजी को चर्म रक्षक वीर के रूप में चित्रित किया है और बताया है कि जब औरंगजेब पूरे देश में देवस्थानों को नष्ट कर रहा था, वेद-पुराण को जला रहा था, हिन्दुओं की चोटी कटवा रहा था, तब शिवाजी महाराज ने ही मुगलों को मरोड़ कर और शत्रुओं को मार कर वेद-पुराण की रक्षा की थी तथा हर घर में

स्वधर्म की रक्षा की थी। इसका चित्रण भूषण ने निम्न कवित्त में की है —

"मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह,
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेग-बल सिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में॥"

इस विवरण में भूषण की धार्मिक वीर भावना की झलक देखने को मिलती है।

भूषण ने अपने दोनों वीर योद्धाओं — शिवाजी एवं छत्रसाल के युद्ध पराक्रम एवं रण-कौशल का अत्यन्त ओजस्वी वर्णन किया है। शिवाजी के साहस का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं —

"छूटत कमान और तीर गोली बानन के,
मुसकिल होत मुरचानहू की ओट में।
ताही समै सिवराज हुकुम के हल्ला कियो,
दावा बाँधि द्वेषिन पै वीरन जोट में॥"

अर्थात् जिस समय रणक्षेत्र में चारों ओर से बाण छूट रहे थे, गोलियाँ चल रही थीं तथा शत्रु सेना सब ओर से घेरे हुए थी, उसी समय वीर शिवाजी ने अपनी सेना को दुर्ग पर आक्रमण करने की आज्ञा दी तथा स्वयं भी शत्रु के किले पर चढ़कर मारकाट मचाते हुए किले में कूद पड़े। भूषण के इस वर्णन में युद्ध-कौशल से परिपूर्ण वीर भावना का अत्यन्त सजीव चित्रण हुआ है।

वस्तुतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि भूषण की वीर भावना में वीरता की उदात्त रूप की अभिव्यक्ति हुई है। वे तत्कालीन

समाज के सम्मुख शारीरिक शौर्य, युद्ध पराक्रम, चारित्रिक उच्चता तथा व्यवहार कुशलता का आदर्श प्रस्तुत किये हैं। भूषण ने शिवाजी एवं छत्रसाल के शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन करके तत्कालीन समाज की प्रसुप्त वीर भावना को जगाने का कार्य किया है। भयभीत एवं त्रस्त जनता को निर्भय एवं निडर बनाने का प्रयास किया है। यही कारण है कि भूषण का काव्य इतिहास और कल्पना का मिश्रण होते हुए भी यथार्थ की ठोस धरातल पर स्थित है और भारतीय संस्कृति, वीरता एवं राष्ट्रीयता का दिग्दर्शन है।